तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी　　　　　　　　वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ　　　　　　　　प्रयोजन - भावना

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

अर्थ : [सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र तीनों मिलाकर [मोक्षमार्गः] मोक्ष का मार्ग है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है।

सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान + सम्यक्चारित्र = मोक्षमार्ग

तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है।

निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२ ॥

अर्थ - [तत्त्वार्थश्रद्धानं] तत्त्व (वस्तु) के स्वरूपसहित अर्थ; जीवादि पदार्थों की श्रद्धा करना [सम्यग्दर्शनम्] सम्यग्दर्शन है।

तत्त्व + अर्थ + श्रद्धान = सम्यग्दर्शन

निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥

अर्थ - [तत्] वह सम्यग्दर्शन, [निसर्गात्] स्वभाव से [वा] अथवा [अधिगमात्] दूसरे के उपदेशादि से उत्पन्न होता है।

तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४ ।।

अर्थ - [जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षाः] १ जीव, २ अजीव, ३ आस्त्रव, ४ बन्ध, ५ संवर, ६ निर्जरा, और ७ मोक्ष—ये सात [तत्त्वम्] तत्त्व हैं।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४ ।। - विशेष

- सात तत्त्वों में से प्रथम दो तत्त्व – 'जीव' और 'अजीव' द्रव्य हैं।
- तथा शेष पाँच तत्त्व उनकी (जीव और अजीव की) संयोगी तथा वियोगी पर्यायें (विशेष अवस्थाएँ) हैं।
- आस्रव और बन्ध संयोगी हैं तथा संवर, निर्जरा और मोक्ष जीव-अजीव की वियोगी पर्यायें हैं।
- जीव और अजीवतत्त्व, सामान्य हैं तथा शेष पाँच तत्त्व, पर्याय होने से विशेष कहलाते हैं।

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - १

- जिसकी दशा को अशुद्ध में से शुद्ध करना है, उसका नाम तो प्रथम अवश्य दिखाना ही चाहिए; इसलिए 'जीव' तत्त्व प्रथम कहा गया है।
- पश्चात् जिस ओर के लक्ष्य से अशुद्धता, अर्थात् विकार होता है, उसका नाम देना आवश्यक है; इसलिए 'अजीव' तत्त्व कहा गया है।

(- तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७-८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - २

- अशुद्धदशा के कारण–कार्य का ज्ञान कराने के लिए ‘आस्रव’ और ‘बन्ध’ तत्त्व कहे गए हैं।
- तत्पश्चात् मुक्ति का कारण कहना चाहिए और मुक्ति का कारण वही हो सकता है जो बन्ध और बन्ध के कारण से उल्टेरूप में हो।

(– तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७–८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - ३

- इसलिए आस्रव के निरोध होने को 'संवर' तत्त्व कहा है।
- अशुद्धता-विकार के एकदेश दूर हो जाने के कार्य को 'निर्जरा' तत्त्व कहा है।
- जीव के अत्यन्त शुद्ध हो जाने की दशा को 'मोक्ष' तत्त्व कहा है।

(- तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७-८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - ४

- इन तत्त्वों को समझने की अत्यन्त आवश्यकता है, इसलिए वे कहे गए हैं।
- उन्हें समझने से जीव, मोक्षोपाय में युक्त हो सकता है।
- मात्र जीव-अजीव को जाननेवाला ज्ञान, मोक्षमार्ग के लिए कार्यकारी नहीं होता। इसलिए जो सच्चे सुख के मार्ग में प्रवेश करना चाहते हैं, उन्हें इन तत्त्वों को यथार्थतया जानना चाहिए।

(- तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७-८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वम् शब्द का भाव एवं प्रयोजन

- सात तत्त्वों के होने पर भी इस सूत्र के अन्त में 'तत्त्वम्' ऐसा एक वचन सूचक शब्द प्रयोग किया गया है।
- जो यह सूचित करता है कि इन सात तत्त्वों का ज्ञान करके, भेद पर से लक्ष्य हटाकर, जीव के त्रिकाल ज्ञायकभाव का आश्रय करने से, जीव शुद्धता प्रगट कर सकता है।

चौथे सूत्र का सिद्धान्त

- जो जीव, इन सात तत्त्वों की श्रद्धा करता है, वही अपने जीव, अर्थात् शुद्धात्मा को जानकर, उस ओर अपना पुरुषार्थ लगाकर, सम्यग्दर्शन प्रगट कर सकता है।
- इन सात (पुण्य-पाप सहित नौ) तत्त्वों के अतिरिक्त, अन्य कोई 'तत्त्व' नहीं है—ऐसा समझना चाहिए।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ४

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ५

निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५ ॥

अर्थ—[नामस्थापनाद्रव्यभावतः] नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव से [तत् न्यासः] उन सात तत्त्वों तथा सम्यग्दर्शनादि का लोकव्यवहार होता है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - सूत्र का प्रयोजन

- वक्ता के मुख से निकले हुए शब्द की अपेक्षा को लेकर भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं।
- उन अर्थों में व्यभिचार (दोष) न आए और सच्चा अर्थ कैसे हो, यह बताने के लिए यह सूत्र कहा है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५ ।। - अर्थ के भेद

- तत्त्वार्थ = तत्त्व् + अर्थ = भाव + वस्तु = वस्तु का भाव
- इन अर्थों के सामान्य चार प्रकार किए गए हैं।
- नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव निक्षेप

जिनवाणी स्तुति